SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"विद्यालय प्रबन्धन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सम्बन्ध"

राधा रानी
शोधार्थिनी
श्रीवेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय,
गजरौला, अमरोहा

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध निर्देशक
श्रीवेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय,
गजरौला, अमरोहा

सारांश

शिक्षा मानव विकास का सामाजिक साधन है। यह मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करके उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाती है तथा उसके ज्ञान भण्डार में वृद्धि करती है। सभ्यता के विकास काल से ही शिक्षा समाज को दृष्टि और दिशा देती है। शिक्षा के द्वारा भारत को विकास के उच्चतर स्तर तक पहुँचाया जा सकता है। शिक्षा अनेक मूर्त व अमूर्त रूप से विभिन्न क्षेत्रों में विकास करके मानव समुदाय को लाभ पहुँचाती है। शिक्षा का सीधा सम्बन्ध विकास से है क्योंकि शिक्षा मानव रूपी धन में गुणात्मक रूप से वृद्धि करती है जिससे विकास की दर ऊँची हो सकती है। शिक्षा राष्ट्रीय विचारधारा एवं चरित्र निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है साथ ही सथ यह राजनैतिक व सामाजिक परिवर्तन में भी सहायता करती है। शिक्षा ही राष्ट्रीय प्रगति का मूलाधार है। परन्तु शिक्षा अपने सभी कार्य तभी कर सकती है जब वह किसी संगठित शिक्षण संस्था में सुचारू रूप से कार्यान्वित हो और किसी संगठित शिक्षण संस्था के लिए प्रबन्धन की आवश्यकता होती है। प्रबन्धन संगठित, व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध ढंग से भौतिक व मानवीय संसाधनों का उचित नियोजन, निर्देशन व नियन्त्रण करके उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए लोगों से कार्य करवाने की एक कला है। शिक्षा में गुणात्मक प्रबन्धन का आशय अपव्य रोककर उपलब्ध संसाधनों का समय उपयोग/सदुपयोग करके शिक्षक, शिक्षार्थी व शिक्षणेत्तर कार्यकर्ताओं को दिशा निर्देशित करने से है ताकि उनकी कार्य कुशलता विकसित हो एवं लक्ष्यों की प्राप्ति हो।

शिक्षा में गुणवत्ता प्रबन्धन : क्यों ?

सबसे पहले प्रबन्धन शब्द का प्रयोग उद्योगों तथा व्यवसाय के क्षेत्र में किया गया परन्तु आज के इस भौतिक युग में प्रबन्धन की आवश्यकता हर क्षेत्र में महसूस की जा रही है। आज

शिक्षा जगत भी अछूता नहीं है। आज देश का सबसे अधिक ध्यान शिक्षा पर है क्योंकि देश का निर्माण विद्यालयों में होता है। विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता अधिक करने के लिए, अधिक योग्य एवं कुशल नागरिकों को तैयार करने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में प्रबन्धन की आवश्यकता है, क्योंकि आज हम सभी जान रहे है कि भारत जैसी देश में जहाँ शिक्षा पर इतना अधिक जोर दिया जा रहा है, धन व्य के सापेक्ष परिणाम प्राप्त नहीं हो पा रहा है इसके पीछे केवल एक ही कारण है कि इस क्षेत्र का ठीक तरह से प्रबन्धन नहीं किया जा रहा है। इसलिए यह जरूरी है कि इन सभी चीजों का बेहतर ढंग से प्रबन्धन करके शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता बनायी जाये। गुणवत्तापरक शिक्षा वर्तमान समय की मांग है और इस माँग को पूरा करने के लिए शिक्षा में गुणवत्ता प्रबन्धन अति आवश्यक है। 21वीं सदी में समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए गुणवत्ता प्रबन्धन जरूरी है क्योंकि गुणवत्ता के समुचित प्रबन्धन के बिना पिछड़ सकता है और शिक्षा के मूल उद्देश्य, छात्र के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य, को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। गुणवत्ता प्रबन्धन के लिए शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाना होगा ताकि शैक्षिक उपाधियों एवं आर्थिक सह–सम्बन्ध ही शिक्षा की गुणवत्ता प्रबन्धन की अभिप्रेरणा है। समाज की विशेषीकृत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सभी प्रकार की शैक्षिक विधाओं का गुणवत्तापरक प्रबन्धन आवश्यक हो जाता है। हम देख रहे है कि स्वतंत्रता के बाद से हमारे देश ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय विकास व विस्तार किया है, साथ ही साथ जनसंख्या में भी तीव्र वृद्धि हुई है। सभी लोगों को शिक्षित बनाने के लिए शिक्षा का भी विस्तार हुआ है। यदि इस विस्तृत शिक्षा को गौर से देखा जाये तो पता चलता है कि यह वृद्धि संख्यात्मक दृष्टि से सराहनीय है, किन्तु इसमें गुणात्मक हास हुआ है। यह गुणात्मक हास ही शिक्षा के गिरते स्तर का कारण है। किसी देश की शिक्षा ही उस देश का भविष्य है क्योंकि हम जैसी शिक्षा वर्तमान पीढ़ी को प्रदान करेंगे वैसा ही उस देश का भविष्य होगा।

वैश्वीकरण ने शिक्षा व्यवस्था को बाजार का रूप दे दिया है, जिसने शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के रूपों को बदल दिया है। गुरू व शिष्य का सम्बन्ध क्रेता–विक्रेता के सम्बन्ध में बदल दिया है। धन की बढ़ती भूमिका ने दोनों को अमानवीय और असंवेदनशील बना दिया है। वर्तमान समय में शिक्षक, शिक्षार्थी प्रबन्धन के अभाव में घर से लेकर विद्यालय, हर जगह बेचैन है, उनके अन्दर दृढ़ इच्छाशक्ति व कर्तव्यनिष्ठा की कमी है। आज आवश्यकता है कि शिक्षक–शिक्षार्थी इस वैश्वीकरण के दौर में नये परिवर्तनों के प्रति आवश्यक कदम उठाएं और उचित प्रबन्धन करते हुए शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि करें। बढ़ती जनसंख्या के कारण छात्र संख्या में तीव्र वृद्धि हो रही है, जिसके सापेक्ष तमाम किसी निजी व सरकारी विद्यालय खोले जा रहे हैं लेकिन उसमें योग्य व

प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति नहीं हो पा रही है। जहाँ कहीं योग्य व प्रशिक्षित शिक्षक है वे शिक्षण से इतर क्रियाकलापों में भाग लेकर पाठन का कार्य सुचारू व पूर्ण मनोयोग से नहीं कर रहे है, जिससे शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है।

शिक्षा में गुणवत्ता प्रबन्धन कैसे ?

शैक्षिक प्रबन्धन के अन्तर्गत सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किस तरह से शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता विकसित की जाये, इसके लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित है :–

- समाज की आवश्यकता
- शैक्षिक उद्देश्यों का सामयिक निर्धारण
- शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का उपाए
- संगठन बनाना
- विद्यालयों की व्यवस्था करना
- शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की व्यवस्था
- मानवीय मूल्यों का ज्ञान व विकास
- योग्य व प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति
- प्रवेश में पारदर्शिता एवं नियमों का पालन
- रोजगारोन्मुखी शिक्षा की व्यवस्था
- शिक्षा के व्यवसायीकरण पर प्रतिबंध
- मूल्यांकन प्रणाली में सुधार
- शिक्षकों का मूल्यांकन
- अच्छे शिक्षकों का प्रोत्साहन
- छात्रों की रूचियों पर ध्यान
- संस्था की गुणवत्ता मूल्यांकन हेतु नैक

शैक्षिक प्रबन्ध के मूल तत्व –

- आवश्यकताओं को पहचानना
- योजना बनाना
- निष्कर्ष निकालना

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

- योजनाओं को क्रियान्वित करना
- संसाधन उपलब्ध कराना

उपरोक्त पदों के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में प्रबन्धन आसानी से कर सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में घट रही गुणवत्ता को बढ़ा कर देश को अच्छे कुशल, सक्षम तथा उत्पादक नागरिक मिल सकते है। यदि प्रबन्धन अच्छी तरह से किया जाये तो कम सुविधाओं के होते हुए भी अच्छी उत्पादकता लायी ज सकती है। क्योंकि जापान जैसे देश ने तरक्की ऐसे ही नही कर ली, हिरोशिमा और नागाशाकी पर हमलों से उबरते हुए उन्होंने उपलब्ध सीमित संसाधनां का इतने अच्छे से प्रबन्धन किया जिससे आज जापान विश्व के विकसित देशों की श्रेणी में आता है। आज हमें भी आवश्यकता ऐसे प्रबन्धन की है जिससे सीमित संसाधनों से शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्तापरक उत्पादकता बढ़ाई जा सकें। यदि शैक्षिक प्रबन्धन में गुणवत्ता लायी जाए तो हमें शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए अलग से प्रयास नहीं करना होगा, शिक्षा में प्रबन्धन लाने के लिए हमें निम्न बिन्दुओं में प्रबन्धन करना होगा–

आवश्यकताओं की पहचान व शैक्षिक तथ्य

- योजनाएँ
- कार्य प्रणाली
- मूल्यांकन
- पर्यवेक्षण कार्य
- नीतियां
- निरीक्षण कार्य
- जवाबदेही
- नियंत्रण
- संस्थाओं में उपलब्ध साधन
- कर्मचारियों में समन्वय

यदि उपरोक्त सभी बिन्दुओं में प्रबन्धन किया जाये तो वह दिन दूर नहीं जब शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में गुणवत्ता बढ़ जायेगी और देश का गुणवत्तापूर्ण विकास सम्भव हो सकेगा। अतः आज हमारा यही प्रयास होना चाहिए कि शिक्षा के हर क्षेत्र में बेहरत प्रबन्धन किया जाये जिससे शिक्षा जिसके लिए जानी जाती है उसकी गुणवत्ता और उत्पादकता में कोई कमी न आ पायें।

यदि बेहतर प्रबन्धन नहीं हो सकता तो सारी शिक्षा व्यवस्था ही ध्वस्त हो जायेगी। अतः इस शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता को बचाने के लिए बेहतर प्रबन्धन ही एक मूल साधन है, जिसका प्रयोग हमें करना होगा।

सन्दर्भ

1. कुमार, मुनेशय 2014 हायर एडूकेशंन इन इंडिया एंड इमरजिंग ट्रेंडस, यूनिवर्सिटी न्यूज, 42 (15), अप्रैल 12–18, पेज 8–10
2. कोठारी, ए०, उच्च शिक्षा की दशा एवं दिशा, दीक्षित, हरबंश 2018, उच्च शिक्षा की साख पर सवाल, ''दैनिक जागरण'' दैनिक पत्र, उ०प्र०।
3. जुरान, जे० प्लानिंग फॉर क्वालिटी, न्यूयॉर्क फ्री प्रेस, 2019 ।
4. थोराट, एस० 2007, पहुँच और गुणवतता पर उठते सवाल, लेख, योजना, मासिक पत्रिका, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
5. गुप्ता, डा० एस०पी० एवं गुप्ता डॉ० अलका (2019) ''भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. पाठक, पी०डी० (2021) 'भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
7. लाल, रमन बिहारी (2021) : ''भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ, रस्तौगी प्रकाशन, मेरठ।
8. पत्रिकाएँ–शिक्षा चिंतन, कान०, क्रॉनिकल इयर बुक ।

   Website : www. bhartiyashikha.com

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/23

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

राधा रानी एवं डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

"विद्यालय प्रबन्धन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में सम्बन्ध"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com